Volume-9, No. 2 Aug.-2022, pp. Hin.28-32

माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत विद्यार्थियों की राष्ट्र प्रेम को सुदृढ़ करने वाले क्रियाकलापों के प्रति जागरूकता का अध्ययन

डा.जे.एस. भारद्वाज, आचार्य शिक्षा विभाग,
चौ0 चरण सिंह विश्वविद्यालय, मेरठ उत्तर–प्रदेश भारत
मिस, प्रियंका जोशी, शोध छात्रा शिक्षा विभाग,
चौ. चरण सिंह विश्वविद्यालय, मेरठ उत्तर–प्रदेश भारत
डा.डी.के. भारद्वाज, सहआचार्य शिक्षा विभाग
कालिज ऑफ ऐजूकेशन विलासपुर नौएडा, उत्तर–प्रदेश भारत

सार–
इस शोध कार्य का उद्वेश्य विभिन्न प्रकार के माध्यमिक स्तर के विद्यालयों में राष्ट्रप्रेम को सुदृढ़ करने वाले क्रियाकलापों के संदर्भ में माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत विद्यार्थियों की जागरूकता का अध्ययन या परीक्षण करना है। जिसके लिए माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों का राष्ट्रप्रेम के प्रति भावों का अध्ययन वर्णनात्मक सर्वेक्षण विधि द्वारा किया गया है। शोध निष्कर्ष के अनुसार विद्या भारती, यू0पी0 बोर्ड तथा सी0बी0एस0ई0 द्वारा संचालित माध्यमिक स्तर के विद्यालयों में अध्ययनरत विद्यार्थियों के राष्ट्रप्रेम में सार्थक अन्तर पाया गया है। शोध परिणामस्वरूप विद्या भारती द्वारा संचालित विद्यालयों में अध्ययनरत विद्यार्थियों में राष्ट्रप्रेम को सुदृढ़ करने वाले क्रिया कलापों के प्रति जागरूकता का झुकाव सर्वाधिक पाया गया है, जबकि यू0पी0 बोर्ड तथा सी0बी0एस0ई0 द्वारा संचालित विद्यालयों में अध्ययनरत् विद्यार्थियों के राष्ट्रप्रेम के आयाम जागरूकता में समानता पायी गयी है। शोध के परिणाम यह भी सुझाव देते है कि विद्यार्थियों के व्यक्तित्व विकास एवं राष्ट्रहित की भावना का विकास हेतु किस प्रकार के क्रियाकलापों का विद्यालयों में समावेशन किया जाना चाहिए?

मुख्य शब्द– राष्ट्रप्रेम, क्रिया कलायें, विद्या भारती, सी.बी.एस.ई. यू.पी. बोर्ड

प्रस्तावना–
आज का युग वैज्ञानिक युग है। नित नये–नये आविष्कारो के द्वारा नई–नई तकनीकी का विकास हो रहा है। इस तकनीकी विकास से शिक्षा भी अछूती नहीं रही है। वर्तमान में शिक्षा छात्रों के केवल ज्ञानात्मक एवं मानसिक विकास तक ही सीमित ना रहकर उसके सर्वांगीण विकास की ओर अग्रसर हुई है। प्राचीन समय में शिक्षा का कार्य मात्र रटन–विद्या था, परन्तु वर्तमान समय को देखते हुए एक अन्य पक्ष राष्ट्रीय एकता की ओर भी ध्यान दिया जाना चाहिए, जिसके लिए विद्यार्थी में अपने राष्ट्र के प्रति प्रेम होना चाहिए। इस प्रत्यय को एक कवि की कविता की चन्द पंक्तियो से सजीव किया गया है–

''जो भरा नहीं है भावों से, बहती जिसमें रसधार नहीं।
वह हृदय नहीं है, पत्थर है जिसमें स्वदेश का प्यार नहीं।''

शारीरिक विकास, भावात्मक विकास एवं क्रियात्मक विकास के साथ–साथ बालक को सामाजिक एवं राष्ट्रीय रूप से सक्रिय बनाने का महत्व दिया जाना चाहिए जिससे वे समाज व देश हित में अपना योगदान दे सकें। मनुष्य एक भावप्रधान प्राणी है, शिक्षा द्वारा उनके अन्दर अपने राष्ट्र के प्रति प्रेम उत्पन्न किया जा सकता है। राष्ट्रीय प्रेम का अर्थ है किसी राष्ट्र के सभी व्यक्तियों में हम की भावना का होना। जब किसी राष्ट्र के सभी व्यक्ति क्षेत्र, जाति, संस्कृति और धर्म आदि की भिन्नता होते हुए भी राष्ट्र के नाम पर 'हम' की भावना से जुड़े होते हैं एक होते है और राष्ट्र हित के आगे अपने वैयष्टिक एवं सामूहिक हितों का त्याग करते हैं तो हम कहते हैं कि उस राष्ट्र में राष्ट्रीय एकता व परस्पर प्रेम है। इसी राष्ट्रीय प्रेम को बरकरार रखने का कार्य करते है विद्यालय एवं विद्यालय में होने वाले क्रियाकलाप जो छात्रों में देश हित एवं राष्ट्र प्रेम की भावना का विकास करते हैं। हमारे भिन्न–भिन्न शिक्षाविद तथा महापुरूषों जैसे

रवीन्द्रनाथ टैगोर, स्वामी विवेकानन्द, महात्मा गांधी, डॉ0 ए0पी0जे0 अब्दुल कलाम आदि ने राष्ट्र प्रेम के महत्व को छात्रों के व्यक्तित्व निर्माण में सहायक समझा तथा देश हित में इसकी वकालत की है।

आज राष्ट्र प्रेम की भावना धीरे–धीरे लुप्त होती जा रही है। पिछली पीढ़ियों के लोगों की तरह आज के युवा अपने देश के प्रति उतनी मजबूत भावना महसूस नहीं करते है। जिससे देश कमजोर होता जा रहा है। विद्यार्थियों के राष्ट्रप्रेम की भावना जाग्रत करने के लिए स्कूल कॉलेज जैसे संस्थानों को आगे आना चाहिए।

राष्ट्रीय प्रेम किसी भी राष्ट्र का मुख्य तत्व होता है। बिना इसके राष्ट्र की कल्पना ही नहीं की जा सकती। आज जिस प्रकार हम अपने इर्द गिर्द देशों में माहौल देखते हैं उससे हमें सीख मिलती है कि शिक्षा ही ऐसा हथियार है जिसे हम लोगों के अन्दर राष्ट्रप्रेम एवं अपनत्व की भावना विकसित कर सकते है। यह शोध इसी बिन्दु पर कार्य करता है कि विद्यालय में जिस प्रकार के क्रियाकलाप कराये जा रहे है तथा शिक्षकों द्वारा जिस प्रकार का व्यवहार विद्यालयों में अपनाया जा रहा है इसका विद्यार्थियों के मन–मस्तिष्क पर क्या प्रभाव पड़ता है तथा विद्यार्थी राष्ट्र के प्रति कितने जागरूक बनते है? यह शोध स्वयं के महत्वपूर्ण इसलिए हो जाता है क्योंकि हम सभी जानते है कि छात्र ही हमारे देश की नींव है तथा देश का भविष्य है। कहा भी गया है–

''भारत के भाग्य का निर्माण वहाँ की कक्षाओं में हो रहा है।'' –**कोठारी आयोग**

पूर्व में डंकलबरगर (1935), रंजना पाठक (1977–78), दास राममेश्वरापु नारायण, प्रभु (2009), कुमारी प्रवीण (2011), महमूद एम0 हुसैन, टी0 खालिद, एम0 एण्ड आजम, आर (2012), जोशी गुंजन (2015) आदि द्वारा किये गये शोधों के निष्कर्षों से शोधार्थिनी के इस शोध की पुष्टि होती है कि विद्यालयों में होने वाले विभिन्न क्रियाकलापों का विद्यार्थियों पर गहरा प्रभाव पड़ता है। इसलिए पूर्व में किये गये इन शोधों के निष्कर्ष वर्तमान शोध की पुष्टि करते है।

शोध में प्रयुक्त शब्दों का अर्थ–

राष्ट्रप्रेम– राष्ट्रप्रेम से तात्पर्य यहाँ छात्रों के हृदय में अपने देश के प्रति एकता व अखंडता, प्रेम व सम्मान से है जो वे अपने देश भारत के लिए महसूस करते है।

क्रियाकलाप– क्रियाकलापों से तात्पर्य यहाँ विद्यालय परिसर में अध्ययन, सहगामी क्रियाओं व शिक्षकों द्वारा किये जाने वाली ऐसी क्रियाओं से है जिनका प्रभाव विद्यार्थियों की भावनाओं विश्वासो, एकता व अखंडता तथा सम्मान पर पड़ता है।

विद्या भारती– प्रस्तुत शोध में विद्या भारती से तात्पर्य मेरठ शहर में विद्या भारती द्वारा संचालित माध्यमिक व उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यालयों से है।

माध्यमिक शिक्षा परिषद् उत्तर प्रदेश–

प्रस्तुत शोध में माध्यमिक शिक्षा परिषद् से तात्पर्य मेरठ शहर में माध्यमिक शिक्षा परिषद् द्वारा संचालित विद्यालयों से है।

केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा परिषद्–

प्रस्तुत शोध में केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा परिषद् से तात्पर्य मेरठ शहर के केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा परिषद्, नई दिल्ली द्वारा मान्यता प्राप्त माध्यमिक स्तर के विद्यालयों से है।

उद्देश्य–

1. माध्यमिक स्तर पर विद्या–भारती तथा सी0बी0एस0ई0 द्वारा संचालित विद्यालयों में अध्ययनरत् विद्यार्थियों में राष्ट्रप्रेम को सुदृढ़ करने वाले क्रियाकलापों के प्रति जागरूकता का तुलनात्मक अध्ययन करना।
2. माध्यमिक स्तर पर विद्या–भारती तथा यू0पी0 बोर्ड द्वारा संचालित विद्यालयों में अध्ययनरत् विद्यार्थियों में राष्ट्रप्रेम को सुदृढ़ करने वाले क्रियाकलापों के प्रति जागरूकता का तुलनात्मक अध्ययन करना।
3. माध्यमिक स्तर पर यू0पी0 बोर्ड तथा सी0बी0एस0ई0 द्वारा संचालित विद्यालयों में अध्ययनरत् विद्यार्थियों में राष्ट्रप्रेम को सुदृढ़ करने वाले क्रियाकलापों के प्रति जागरूकता का तुलनात्मक अध्ययन करना।

परिकल्पना–

1. माध्यमिक स्तर पर विद्या–भारती तथा सी0बी0एस0ई0 द्वारा संचालित विद्यालयों में अध्ययनरत् विद्यार्थियों में राष्ट्रप्रेम को सुदृढ़ करने वाले क्रियाकलापों के प्रति जागरूकता में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।
2. माध्यमिक स्तर पर विद्या–भारती तथा यू0पी0 बोर्ड द्वारा संचालित विद्यालयों में अध्ययनरत् विद्यार्थियों में राष्ट्रप्रेम को सुदृढ़ करने वाले क्रियाकलापों के प्रति जागरूकता में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।
3. माध्यमिक स्तर पर यू0पी0 बोर्ड तथा सी0बी0एस0ई0 द्वारा संचालित विद्यालयों में अध्ययनरत् विद्यार्थियों में राष्ट्रप्रेम को सुदृढ़ करने

वाले क्रियाकलापों के प्रति जागरूकता में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

जनसंख्या–

प्रस्तुत शोध में मेरठ शहर के विद्या भारती, यू0पी0 बोर्ड, तथा सी0बी0एस0ई0 द्वारा संचालित माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत् विद्यार्थियों तक सीमित रखा गया है।

न्यादर्श एवं न्यादर्श विधि–

प्रस्तुत शोध में न्यादर्श का चयन व्यवस्थित यादृच्छिक प्रतिचयन विधि द्वारा किया गया जिसमें मेरठ शहर के विद्या–भारती, सी0बी0एस0ई0 तथा यू0पी0 बोर्ड द्वारा संचालित प्रत्येक प्रकार के 2–2 विद्यालयों के 50–50 विद्यार्थियों का चयन व्यवस्थित यादृच्छिक प्रतिचयन विधि द्वारा किया गया है। इस प्रकार 300 विद्यार्थियों पर यह शोध कार्य पूर्ण किया गया है।

शोध विधि–

प्रस्तुत शोध मुख्य रूप से दो भागों में विभक्त है। पहले भाग में राष्ट्रीय प्रेम संबंधी क्रियाकलापों के प्रति जागरूकता को प्रश्नावली द्वारा जानने का प्रयास किया गया है तथा दूसरे भाग में प्राप्त अभिमतों का तुलनात्मक अध्ययन किया गया है जिसके आधार पर विभिन्न प्रकार के विद्यालयों में अध्ययनरत् विद्यार्थियों में राष्ट्र प्रेम को सुदृढ़ करने वाले क्रियाकलापों के प्रति जागरूकता के स्तर को जानना है।

शोध विधि के रूप में वर्णनात्मक सर्वेक्षण विधि को प्रयुक्त किया गया तथा आंकड़ों के विश्लेषण में सांख्यिकीय तकनीकी X^2 (काई स्क्वायर) का प्रयोग किया गया है। आंकड़ों के संकलन के लिए शोध–उपकरण के रूप में स्वनिर्मित प्रमापीकृत व वैध प्रश्नावली का प्रयोग किया गया है।

आंकड़ों का परिकल्पानाओं के अनुसार विश्लेषण–

परिकल्पना–1 ''माध्यमिक स्तर पर विद्या–भारती तथा सी0बी0एस0ई0 द्वारा संचालित में अध्ययनरत् विद्यालयों के विद्यार्थियों के मध्य राष्ट्रप्रेम को सुदृढ़ करने वाले क्रियाकलापों के प्रति जागरूकता में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।''

तालिका–1

राष्ट्रप्रेम संबंधी कथनों की हाँ में प्राप्त अनुक्रिया का प्रतिशत के आधार पर x^2 की गणना के लिए प्रयुक्त कर तुलनात्मक विवरण

आयाम (राष्ट्र प्रेम) विद्यालय का प्रकार	देश के प्रति सम्मान	देशभक्ति कार्यक्रम	राष्ट्रीय एकता	देश के प्रति दायित्व	शहीदों के प्रति सम्मान	भारत का गौरवशाली इतिहास के प्रति जिज्ञासा
विद्या भारती	100	97	100	98	100	92
सी0बी0एस0ई0	50	55	55	50	87	85

विद्यार्थियों की संख्या (N) = 100+100 = 200

$(X)^2$ का गणना मान = 15.404

स्वतन्त्रता का अंश (df) = 5

सार्थकता स्तर 0.05 स्तर पर तालिका मान 11.07 तथा 0.01 स्तर पर तालिका मान 15.09

अर्थापन– उपरोक्त तालिका के अध्ययन से यह ज्ञात होता है कि विद्या भारती तथा सी0बी0एस0ई0 के विद्यार्थियों में राष्ट्रप्रेम को सुदृढ़ करने वाले क्रियाकलापों के प्रति जागरूकता सम्बन्धी आंकडो की तुलना काई स्क्वायर (X^2) द्वारा की गई। X^2 का गणना मान 15.404 प्राप्त हुआ। इसका तालिका मान स्वतन्त्रता अंश (df) 5 पर सार्थकता के स्तर 0.05 पर 11.07 तथा सार्थकता के स्तर 0.01 पर 15.09 है। तुलना करने पर गणनामान तालिका मान से अधिक प्राप्त हुआ। जिस कारण शून्य परिकल्पना अस्वीकृत हो जाती है। अतः अर्थापन यह है कि विद्या भारती तथा सी0बी0एस0ई0 के विद्यार्थियों में राष्ट्रप्रेम को सुदृढ़ करने वाले क्रियाकलापों के प्रति जागरूकता में अन्तर सार्थक पाया गया। आंकडो के विशलेषण के आधार पर कहा जा सकता है कि विद्या भारती द्वारा संचालित माध्यमिक स्तर के विद्यालयों में अध्ययनरत विद्यार्थियों में सी0बी0एस0ई0 द्वारा संचालित माध्यमिक स्तर के विद्यालयों में अध्ययनरत विद्यार्थियों की अपेक्षा राष्ट्रप्रेम सम्बन्धी क्रियाकलापों के प्रति जागरूकता अधिक है।

परिकल्पना–2 ''माध्यमिक स्तर पर विद्या–भारती तथा यू0पी0 बोर्ड द्वारा संचालित विद्यालयों में अध्ययनरत् विद्यार्थियों के मध्य राष्ट्रप्रेम को सुदृढ़ करने वाले क्रियाकलापों के प्रति जागरूकता में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।''

तालिका–2

राष्ट्रप्रेम संबंधी कथनों का हाँ में प्राप्त अनुक्रिया का प्रतिशत के आधार पर x^2 की गणना के लिए प्रयुक्त कर तुलनात्मक विवरण

आयाम विद्यालय का प्रकार	देश के प्रति सम्मान	देशभक्ति कार्यक्रम	राष्ट्रीय एकता	देश के प्रति दायित्व	शहीदों के प्रति सम्मान	भारत का गौरवशाली इतिहास के प्रति जिज्ञासा
विद्या भारती	100	97	100	98	100	92
यू0पी0 बोर्ड	45	55	45	50	87	80

विद्यार्थियों की संख्या (N) = 100+100 = 200

(x^2) का गणना मान = 18.32

स्वतन्त्रता का अंश (df) = 5

सार्थकता स्तर 0.05 स्तर पर तालिका मान 11.07 तथा 0.01 स्तर पर तालिका मान 15.09

अर्थापन–

उपरोक्त तालिका के अध्ययन से यह ज्ञात होता है कि विद्या भारती तथा यू0पी0 बोर्ड द्वारा संचालित माध्यमिक स्तर के विद्यालयों में अध्ययनरत विद्यार्थियों में राष्ट्रप्रेम को सुदृढ़ करने वाले क्रियाकलापों के प्रति जागरूकता सम्बन्धी आंकडो की तुलना काई स्क्वायर (x^2) द्वारा की गई। x^2 का गणना मान 18.32 प्राप्त हुआ इसका तालिका मान स्वतन्त्रता अंश (df) 5 पर सार्थकता के स्तर 0.05 पर 11.07 तथा सार्थकता के स्तर 0.01 पर 15.09 है। x^2 का गणना मान तालिका मान से अधिक है। अतः शून्य परिकल्पना अस्वीकृत हो जाती है। अतः अर्थापन यह है कि विद्या–भारती तथा यू0पी0 बोर्ड द्वारा संचालित माध्यमिक स्तर के विद्यालयों में अध्ययनरत विद्यार्थियों में राष्ट्रप्रेम को सुदृढ़ करने वाले क्रियाकलापों के प्रति जागरूकता में अन्तर सार्थक पाया गया गया है, आंकडो के विशलेषण के आधार पर कहा जा सकता है कि विद्या भारती द्वारा संचालित माध्यमिक स्तर के विद्यालयो में अध्ययनरत विद्यार्थियों में सी0बी0एस0ई0 द्वारा संचालित माध्यमिक या उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यालयों में अध्ययनरत विद्यार्थियों की अपेक्षा राष्ट्रप्रेम सम्बन्धी क्रियाकलापों के प्रति जागरूकता अधिक है।

तृतीय परिकल्पना–3

''माध्यमिक स्तर पर यू0पी0 बोर्ड तथा सी0बी0एस0ई0 द्वारा संचालित विद्यालयों में अध्ययनरत् विद्यार्थियों के मध्य राष्ट्रप्रेम क्रियाकलापों के प्रति जागरूकता में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।''

तालिका–3

राष्ट्रप्रेम संबंधी कथनों का हाँ में दी अनुक्रिया का प्रतिशत के आधार पर x^2 की गणना के लिए प्रयुक्त कर तुलनात्मक विवरण

आयाम विद्यालयका प्रकार	देश के प्रति सम्मान	देशभक्ति कार्यक्रम	राष्ट्रीय एकता	देश के प्रति दायित्व	शहीदों के प्रति सम्मान	भारत का गौरवशाली इतिहास के प्रति जिज्ञासा
यू0पी0 बोर्ड	45	55	45	50	87	80
सी0बी0एस0ई0	50	55	55	50	87	85

विद्यार्थियों की संख्या (N) = 100+100 = 200

(x^2) का गणना मान = 0.87

स्वतन्त्रता का अंश (df) = 5

सार्थकता स्तर 0.05 स्तर पर तालिका मान 11.07 तथा 0.01 स्तर पर तालिका मान 15.09

अर्थापन–

उपरोक्त तालिका के अध्ययन से यह ज्ञात होता है कि यू0पी0 बोर्ड तथा सी0बी0एस0ई0 द्वारा संचालित माध्यमिक या उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यालयो में अध्ययनरत विद्यार्थियों में राष्ट्रप्रेम को जाग्रत करने वाले क्रियाकलापों के प्रति जागरूकता सम्बन्धी आंकडो की तुलना काई स्क्वायर (x^2) द्वारा की गई। x^2 का गणना मान 0.87 प्राप्त हुआ इसका तालिका मान स्वतन्त्रता अंश (df) 5 पर सार्थकता के स्तर 0.05 पर 11. 07 तथा सार्थकता के स्तर 0.01 पर 15.09 है। x^2 का गणना मान तालिका मान से कम है। अतः शून्य परिकल्पना स्वीकृत हो जाती है। अतः अर्थापन यह है कि यू0पी0 बोर्ड तथा सी0बी0एस0ई0 द्वारा संचालित माध्यमिक या उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यालयों के विद्यार्थियों में राष्ट्रप्रेम को सुदृढ़ करने वाले क्रियाकलापों के प्रति जागरूकता में अन्तर सार्थक नहीं पाया गया है। आंकडो के विश्लेषण के आधार पर कहा जा सकता है, कि माध्यमिक स्तर पर यू0पी0 बोर्ड तथा सी0बी0एस0ई0 विद्यालयों में राष्ट्रप्रेम को सुदृढ़ करने वाले क्रियाकलापों के प्रति जागरूकता समान है।

शोध निष्कर्ष–

- शोध की प्रथम परिकल्पना के परीक्षण से यह ज्ञात होता है कि माध्यमि स्तर पर विद्या–भारती तथा सी0बी0एस0ई0 द्वारा संचालित विद्यालयों में अध्ययनरत विद्यार्थियों के मध्य राष्ट्रप्रेम को सुदृढ़ करने वाले

क्रियाकलापों के प्रति जागरूकता में सार्थक अन्तर पाया गया है।

- शोध की द्वितीय परिकल्पना के परीक्षण से यह ज्ञात होता है कि माध्यमिक स्तर पर विद्या भारती तथा यू0पी0 बोर्ड के द्वारा संचालित विद्यालयों में अध्ययनरत विद्यार्थियों के मध्य राष्ट्रप्रेम को सुदृढ़ करने वाले क्रियाकलापों के प्रति जागरूकता में सार्थक अन्तर है।
- शोध की तृतीय परिकल्पना के परीक्षण से यह ज्ञात हुआ कि माध्यमिक स्तर पर यू0पी0 बोर्ड तथा सी0बी0एस0ई0 विद्यालयों के विद्यार्थियों के मध्य राष्ट्रप्रेम को सुदृढ़ करने वाले क्रियाकलापों
- के प्रति जागरूकता में कोई सार्थक अन्तर नहीं पाया गया है।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. डंकलबरगर, (1935) ''द रिलेशनशिप विटविन एक्स्ट्रा करिक्युलर एक्टिविटीज एण्ड एकेडमिक सक्सेस''
2. रंजना पाठक (1977–78) ''स्टडी ऑन द को करिक्युलर एक्टिविटी इन द गर्ल्स हाई स्कूल ऑफ ग्रेटर गुवाहटी एण्ड इट्स इम्पैक्ट ऑन द स्टूडेण्ट लाईफ, असम''
3. दास रामेश्वरापु नारायण, प्रभु (2009) ''ए कम्पेरिटिव स्टडी ऑफ को–करिक्युलर एक्टिविटीज परफॉर्मड इन डिफरेन्ट इंगलिश मीडियम एण्ड ओडिया मीडियम सेकेण्डरी स्कूल इन द डिस्ट्रिक्ट ऑफ खुरदो''
4. कुमारी प्रवीण (2011) ने ''ए कम्पेरेटिव स्टडी ऑफ एटीट्यूडस ऑफ सेकेण्डरी एण्ड सीनियर सेकेण्डरी स्कूल स्टूडेन्ट्स टूवर्डस को–करिक्युलर एक्टीविटीज''
5. गैरेट, हेनेरी ई० (1989), ''शिक्षा एवं मनोविज्ञान में सांख्यिकी'', ग्यारहवां संस्करण, कल्याणी पब्लिशर्स, नई दिल्ली–2
6. पारीक, यू० एण्ड राय, टी०वी० (1974), हैण्ड बुक ऑफ साइकोलोजिकल एण्ड सोशल इंस्ट्रूमेंट्स, बड़ौदाः समस्थी
7. जोशी गुंजन (2015) 'समूहगान के अन्तर्गत देशभक्ति गीतों का राष्ट्रीय एकता में योगदान'
8. महमूद, एम0 हुसैन, टी0 खालिद, एम0 एण्ड आजम, आर (2012) ''द इम्पैक्ट ऑफ को–करिक्यूलर एक्टिविटीज ऑफ पर्सेनेलिटी डेवलेपमेण्ट ऑफ सेकेण्डरी स्कूल स्टूडेन्टस्''

पुस्तकें व लेखक–

9. डॉ0 आर0ए0 शर्मा (2015), शिक्षा के दार्शनिक एवं सामाजिक मूल आधार, आर0 लाल बुक डिपो, मेरठ।
10. प्रो0 रमन बिहारी लाल एवं श्रीमती सुनीती पलोड (2016) शिक्षा के दार्शनिक एवं समाजशास्त्रीय परिदृश्य।
11. लोकेश कौल (2010) शिक्षा अनुसंधान की कार्यप्रणाली, आर0लाल बुक डिपो, विकास पब्लिशिंग हाउस, प्रा0लि0, मेरठ।

वेबसाइट लिंक

12. www.shodhganga.inflabnet.ac.in
13. www.un.org/eduwatch
14. www.google.com
15. www.m.jagran.com
16. microbenotes.com
17. bhaskar.com
18. hindifiles.com
19. researchgate.net